"गुरू वचन"

- खरे खरोए बैठत ऊठंत मारगि पंथ धिआवैगो । सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधर मुकति जनावैगो । (4-1309)

अर्थ:- जैसे बेड़ी पत्थरों को लोहे को नदी से पार लंघाती है जैसे साध - संगत की बरकत से कबीर जुलाहा पार लांघ गया । हे भाई ! परमात्मा अपने संत - जनों के मन में सदा प्यारा लगता है । हे भाई ! जिस मनुष्य का मन गुरू की मति ले के स्वाद से हरी गुणगान करने लग जाता है । वह मनुष्य खड़े - खड़े, बैठते, उठते, रास्ते में चलते हुए हर वक्त परमात्मा का नाम जपता रहता है ।

• अलख रुप जीअ लख्या न जाई । साधिक सिध सगल सरणाई । गुर के बचन सति जीअ धारहु । माणस जनम देह निस्तारहु । (4-1401)

अर्थः- किसी भी पक्ष से अलख प्रभू के रूप को और गुरू के स्वरूप को परखा नहीं जा सकता । सारे सिद्ध और साधना करने वाले सतिगुरू की शरण आए हैं । हे मन ! गुरू का वचन दृढ़ करके चित्त में बसाओ और इस तरह अपने मानस - जन्म और शरीर को सफल कर लो ।

• करहु कृपा जगजीवन दाते मेरा मन हरि सेती राचे । सतिगुर बचन दीओ अति निरमल जपि हरि हरि मन माचे ।1।

अर्थः- हे जगत के जीवन ! हे दातार ! कृपा कर मेरा मन तेरी याद में मस्त रहे । तेरी कृपा से सतिगुर ने मुझे बहुत पवित्र उपदेश दिया है अब मेरा मन हरी नाम जप - जप के खुश हो रहा है ।

राम मेरा मन तन बेधि लीओ हरि साचे । जिह काल कै मुख जगत सभ ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ।1।

अर्थः- हे राम ! हे सदा कायम रहने वाले हरी ! तूने मेहर कर के मेरे मन को मेरे तन को अपने चरणों में बेध लिया है । जिस आत्मिक मौत के मुंह में सारा संसार निगला हुआ है उस आत्मिक मौत से मैं सतिगरू के उपदेश की बरकत से बच गया हूँ ।

जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे । तिन कउ जनम मरण अति भारी विच विसटा मरि मरि पाचे ।2।

(4-169)

अर्थः- जिन मनुष्यों को परमात्मा के चरणों के साथ प्रीति प्राप्त नहीं हुई वे माया के आँगन में मूर्ख मनुष्य कमजोर जीवन वाले रहते हैं ।

उनके वास्ते जनम - मरण का दुखदायक चक्र बना रहता है । वे विकारों की गंदगी में आत्मिक मौत ले ले कर दुखी होते रहते हैं ।

• सिमरउ सिमरिउ सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले । इह लोक परलोक संग सहाई जत कत मोह रखवाले ।1।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा के नाम को मैं अपने हरेक सांस के साथ हृदय में बसा के सिमरता हूँ और सिमर - सिमर के आत्मिक आनंद प्राप्त करता हूँ । ये हरी नाम इस लोक में और परलोक में मेरे साथ मददगार है हर जगह मेरा रखवाला है ।

गुर का बचन बसै जीअ नाले । जल नही डूबै तसकर नही लेवै भाहि न साकै जाले ।1। रहाउ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा की सिफत सालाह से भरपूर गुरू का शबद मेरी जिंद के साथ बसता है । परमात्मा का नाम एक ऐसा धन है जो पानी में डूबता नहीं । जिसको चोर चुरा नहीं सकता जिसे आग नहीं जला सकती ।

निरधन कउ धन अंधले कउ टिक मात दूध जैसे बाले । सागर महि बोहिथ पाइओ हरि नानक करी कृपा किरपाले ।2।1।32।

(5-679)

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा का नाम कंगाल के लिए धन है । अंधे के वास्ते डंगोरी छड़ी है । जैसे बच्चे के लिए माँ का दूध है वैसे ही हरी - नाम मनुष्य की आत्मा के लिए भोजन है । हे नानक ! जिस मनुष्य पर कृपालु प्रभू ने कृपा की उसको ये नाम मिल गया जो समुंद्र में जहाज है ।

• जिस जल निधि कारण तुम जग आए सो अंमृत गुर पाही जीउ । छोडहु वेस भेख चतुराई दुबिधा इह फल नाही जीउ ।1।

अर्थः- हे भाई ! जिस अमृत के खजाने की खातिर तुम जगत में आए हो वह अमृत गुरू की ओर से मिलता है पर धार्मिक भेष का पहरावा छोड़, मन की चालाकी भी छोड़ दे बाहर की सूरत धर्मियों वाली और अंदर से दुनिया को ठगने वाली चालाकी इस दुविधा भरी चाल में उलझे रह के ये अमृत फल की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

मन रे थिर रहु मत कत जाही जीउ । बाहरि ढूढत बहुत दुख पावहि घरि अंमृत घट माही जीउ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! अंदर ही प्रभू चरणों में टिका रह । देखना नाम - अमृत की तलाश में कहीं बाहर ना भटकते फिरना । अगर तू बाहर ढूँढने निकल पड़ा तो बहुत दुख पाएगा । अटल आत्मिक जीवन देने वाला रस तेरे घर में ही है हृदय में ही है ।

अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछताही जीउ । सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ।2।

अर्थः- हे भाई ! अवगुण छोड़ के गुण हासिल करने का यतन करो । अगर अवगुण ही करते रहोगे तो पछताना पड़ेगा । हे मन ! तू बार - बार मोह के कीचड़ में डूब रहा है । तू अच्छे - बुरे की परख करनी नहीं जानता ।

अंतरि मैल लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ । निरमल नाम जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ।3।

अर्थः- हे भाई ! अगर अंदर मन में लोभ की मैल है और लोभ के अधीन हो के कई ठॅगी के काम करते हो तो बाहर तीर्थ आदि पर स्नान करने के क्या लाभ । अंदर की ऊँची अवस्था तभी बनेगी जब गुरू के बताए हुए रास्ते पर चल के सदा प्रभू का पवित्र नाम जपोगे ।

परहरि लोभ निंदा कूड़ तिआगहु सच गुर बचनी फल पाही जीउ । जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ।4।9। (1-598)

अर्थः- हे मन ! लोभ, त्याग, निंदा और झूठ त्याग । गुरू के बचनों में चलने से ही सदा स्थिर रहने वाला अमृत फल मिलेगा । हे दास नानक ! प्रभू दर पर अरदास कर और कह हे हरी ! जैसे तेरी रजा हो वैसे ही मुझे रख पर ये मेहर कर कि गुरू के शबद में जुड़ के मैं तेरी सिफत सालाह करता रहूँ ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगंधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"